सबके दु:ख दूर हो, सपने भी, साकार होंगे

'हथकरघा क्यों'

चारो तरफ कैसी दिशाओ से या जो रास्ता है ये

आचार्य भगवन कितने कपड़े पहिने ? अरे तन पर एक धागा भी नहीं धारण किये तो उनको हर शहर, नगर, गाँव में हथकरघा दुकान और हथकरघा लूम लगवाकर यहाँ तक मंदिर में कभी दुकान लगती क्या ? फिर क्यों कपड़े की दुकान लगवा रहे ? क्यों बड़ी-बड़ी नौकरी करने वाले पढ़े-लिखे नवयुवक को ब्र॰ भाईयों को बेरोजगार करके हथकरघा चलवा रहे हैं।

इनका जवाब है - एक अहिंसा, करूणा दया रूप में धर्म पले, सक्रिय सम्यक् दर्शन पालन हो। अहिंसा परमो धर्म:॥

हथकरघा चलाने का मुख्य कारण यह है कि सभी लोग हिंसक वस्त्रों से बचें रहें और अहिंसा की ओर अपना कदम बढ़ायें। और इसके साथ-साथ बहुत से लोगों को रोजगार मिल सके।

अभय दान
कि खान, अहिंसा कि
खान, चरखा

चल चरखा
रुकना नहीं, गुरु
का आशीर्वाद

अहिंसा परमोधर्मः

हर घर व मंदिर में हथकरघा।

क्या वस्त्र भी हिंसक होते हैं? हाँ, जो पावरलूम के कपड़े होते हैं वह पशुओं की चर्बी से प्राप्त 'मटन टैलो' नामक पदार्थ से बने (पॉलीश) होते हैं। इसलिए भगवान के अभिषेक का व पानी छानने वाला व पूजन व आहार में उपयोग होने वाले कपड़े हथकरघा के हों जिससे हमारे जैन धर्म का सूत्र 'अहिंसा परमो धर्मः' का पालन हो सके और हमारे द्वारा किये पुण्य कार्य का पूरा-पूरा पुण्य लाभ हो।

जैनियों सावधान! जागो जैन जागो।

आप शाकाहारी नहीं और न ही जैन हैं यदि आप पावरलूम का बना हुआ मटन-टैलो से बना हुआ पानी का छन्ना प्रयोग में ले रहे हैं तो वे पानी छानकर नहीं पी रहे बल्कि जानवरों की चर्बी के रस का पान कर रहे हैं। इसलिए शीघ्र अपने घर में हथकरघा का छन्ना लायें।

सर्व मनोकामना पूर्ण कार्य

दुनिया के नियम व्रत बड़े-बड़े उपवास तप जाप और धर्म के नाम से किए जाने वाले जितने भी शुभ कार्य है वो सब व्यर्थ है यदि अहिंसा न पाले तो, जैन धर्म का मूल सिद्धान्त (Principal) है अहिंसा जिसकी हम सभी जयकारे गूँज करते है।

जीवन के है, तीन निशान, रोटी, कपडा और मकान ?
इनमें से आवश्यक अनिवार्य सर्वप्रथम क्या (कौन) है ? सोंचो और विचार करो ?

हमारा एक क्षण भी बिना कपडे के चल सकता है क्या ?
और हम जिन कपडों का प्रयोग कर रहे है, उनको निर्मित करने की विधि में जो मूक पशुओं के निर्दयता के साथ मौत के घाट उतार दिया जाता है, मतलब यह हुआ ये जो आपके कपडे है वह पूर्ण रूप से हिंसक है।

अब आप ही विचार करिए की हम जैन हैं और हमारा जैन धर्म का मूल सूत्र अहिंसा है।

आप जैन हैं और जैन की पहचान, देव दर्शन (पूजा) रात्री भोजन त्याग एवं छना पानी पीना।

जब आप अपने इन नियमों का पालन करेंगे तो सबसे पहले पानी छानने के लिए कपडा और छने हुए पानी से स्नान करने के बाद कपडा और फिर भगवान के पूजन में प्रयोग होने वाले वस्त्र धोती-दुपट्टा व प्रक्षालन के लिए प्रयोग में आने वाला वस्त्र यदि अहिंसक नहीं है तो मतलब क्या हुआ?

इन सब विधि में या धार्मिक कार्यों में हिंसक वस्त्रों का प्रयोग हुआ।

जैसे अहिंसा की मूर्ति आपके आराध्य जिनेन्द्र प्रभु के प्रक्षाल के समय यदि आपने हिंसक वस्त्र का प्रयोग कर लिया तो आपके सभी व्रत नियम संयम तप-दान आदि क्रियाएं हिंसक वस्त्रों के प्रयोग से अहिंसा का सूत्र पला क्या?

और जहाँ अहिंसा नही वहाँ जैन धर्म है क्या?

प्रश्न →

चमड़े की वस्तुओं का प्रयोग नहीं पर
फिर पशुओं की चर्बी से निर्मित
धागे से बने वस्त्रों का प्रयोग क्यों?

हर एक कार्य में चाहे वह पार्टी हो,
शादी हो, जन्मदिन हो, स्कूल, कॉलेज
ऑफिस सबके लिए वस्त्र निर्धारित
है। सबके लिए ड्रेस कोड, योगा,
पी.टी., जौगिंग के लिए ड्रेस कोड है
पर अहिंसा स्थानों के लिए, मंदिर
तीर्थ स्थलों के लिए और आहारदान
भजन के लिए ड्रेस कोड क्यों नहीं
सोचिए, विचार कीजिए -

हथकरघा - अहिंसा वस्त्र प्रयोग के लिए
संकल्प लीजिए -

जन्म से लेकर आजतक हिंसक व
का प्रयोग किया एक खून की
सजा क्या?

और जन्म से लेकर आजतक खून
कपड़ों / वस्त्रों के प्रयोग का
पाप उदय आयेगा तो कभी
... पापियों का

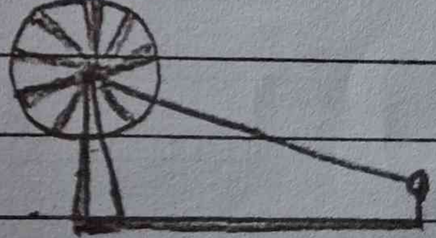
... ल्ला) को खरीदा, पर
आज तक क्या जिनको सर्वस्व मानते
हैं। जिनकी बदौलत सारी दौलत
है इनको एक धागा भी दान
नहीं दिया होगा - सोचो ऐसे गुरु
आर्यिका) माँ, माता पिता और भगवा
को (प्रक्षाल का वस्त्र), वस्त्र धारी साध
के लिए वस्त्र दान (नहीं) किया।

झाड़ू वाले में, बर्तन साफ करने वा
में और आप में क्या अंतर है
वो भी हिंसक वस्त्रों का प्रयोग क
हैं और आप ...... अहिंसक वस्त्र जा
तो आपको इच्छाकर धा के वहस्त्र के रूप में ऐसा छोड़ दि
माँ, बहिन बेटी वर्ग / स्त्री पर्याय
अस्पर्श पर्याय / निंदनीय पर्याय -
जो जिनेन्द्र प्रभु को छू भी नहीं
सकते और जो कुछ दौलत है जिन
बदौलत है - इनको क्या दिया।
अपने लिए और अपनों के लि
तो हम हर दम, हर साल लेते
रहते हैं, पर कभी सोचा कि
जिन प्रभु को हम छू नहीं स
जिन गुरुओं को हम छू नहीं स
या हमारे इष्ट को जो वस्त्रह

है उनको अहिंसा वस्त्र दान कर
अपने पुण्य की वृद्धि करें।
हथकरघा से सबका हित है
करुणादान - बेरोजगारों पर करें, मूक
पशुओं पर दया करें। अहिंसा वस्त्र
से कितने सारे नियमों का पालन
किया जा सकता है - जैसे राष्ट्रहित,
जनहित, स्वहित, राष्ट्र वृद्धि, निरोगता
गुरु आज्ञा पालन, दुर्जन को सज्जन
बनाने में कारण, जीव रक्षा।

हथकरघा - बहुमुखी योजना है यह
सर्वकल्याणकारी है।

अभय दान की खान, अहिंसा की जान
"चरखा"



चल चरखा रुकना नहीं गुरु का आशीर्वाद

गुरु